1973? Pandit Hira Lal Siddhant Shastri

Biographical sketches (as in Vidvat Abhinandan Granth) and other expressions of appreciation



पं० हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री

पौने दो वर्षके बच्चेको छोड़कर जब माँ राजरानीका स्वर्गारोहण हुआ तो श्रीमान् दरयावलालजी (बालकके पिता)का हृदय टूक-टूक हो गया। बालकके बड़े भाई एवं भावजके कानोंमें मरणासन्न माँके शब्द तब भी गूँज रहे थे, "बेटी ले माँकी अन्तिम निशानी है आजसे भावज होनेके साथ ही साथ तू इसकी माँ भी है।"

और बहू रानीने ज्योंही शिशुको पर्यङ्कशायी माँके पार्श्वसे उठाया था त्यों ही माँका सिर लटक गया। उस दिन किसीने कल्पना तक नहीं की थी कि मातुबिरहित वह अबोध शिशु एक

दिन भारतके चोटीके विद्वानोंमें गिना जायगा।

मातृ सुखविञ्चत बालक सवकी आँखोंका तारा बना । दिन प्रतिदिन चाँदकी तरह कान्ति एवं वृद्धिको प्राप्त होता गया । छ: वर्षके वयमें बालकको विद्यार्जन हेतु शिक्षालयमें प्रविष्ट कराया गया । वहाँ भी वह छात्रोंका सम्मान-पात्र एवं गुरुजनोंका स्नेह भाजन बना । उच्च शिक्षाएँ प्राप्त करता हुआ वही शिशु आज भारतके गौरव गुम्फित विद्वान् पं० हीरालालजीके नामसे हमारे समक्ष आया ।

श्रावण कृष्णा ३० सं० १९६१ में आपका जन्म परवार जातिमें हुआ । आपका जन्म स्थान साढूमल हैं। उ० प्र० (लिलितपुर) आपको जीवनमें अनेक दुःखोंके मुँह देखने पड़े। १९७५ में आपकी बड़ी मावजका भी देहावसान हो गया। उनकी उस असामयिक मृत्युसे परिवार संकटाछन्न हो गया। उस समय आप स्थानीय महावीर दिगम्बर जैन पाठशालामें विशारद द्वितीय खण्डके छात्र थे। आपको कौटुम्बिक परि-

१४६ : विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थ

स्थितिसे द्रवित होकर स्वनामधन्य, उक्त संस्था-संस्थापत स्व॰ सेठ लक्ष्मीचन्द्रजीन आपकी छात्रावासमें रख लिया जिससे आप निराकुल हो आगे की पढ़ाई जारी रख सके । आपने स्व॰ हु॰ दि॰ जैन विद्यालय इन्दोर से धर्मशास्त्री, न्यायतीर्थ एवं साहित्य शास्त्रीकी परीक्षाएँ उत्तीर्ण की इसके बाद जैन शिक्षा मन्दिर जवल-पुरसे सिद्धान्तशास्त्री किया ।

अध्ययन समाप्त करनेके उपरान्त आपने सन् १९२४से ३८ तक अनेको संस्थाओं में अध्यापन कार्य किया और इसके पश्चात् १९३९से आप ग्रन्थ सम्पादन कार्य कर रहे हैं। आपके अनुवादित एवं सम्पादित ग्रन्थों में स्वलं एवं सम्पादित ग्रन्थों में से स्वलं एवं स्वलं सिद्धान्त) भाग १, २, ३, ४, ५ एवं ६, कसायपाहुड सुत्त, पञ्च संग्रह, कर्म प्रकृति, वसुनन्दी श्रावकाचार, जिन सहस्रनाम, जैन धर्मामृत, प्रमेय रत्नमाला, दयोदय, सुदर्शनोदय, वीरोदय, छहढाला एवं द्रव्य संग्रह, श्रावकाचार संग्रह तीन भाग आदि अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त अभी तक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओंमें आपके लगभग २५० निवन्ध भी प्रकाशित हो चुके हैं। आपकी अप्रकाशित रचनाएँ निम्न प्रकार हैं।

१. कुन्दकुन्दाचार्यके समस्त ग्रन्थोंकी गाथाओं का दोहानुवाद । २. सावयधम्म दोहाका हिन्दी दोहा-नुवाद । ३. पाहुड दोहाका हिन्दी दोहानुवाद । ४. पुरुषार्थानुसानका हिन्दी अनुवाद । ५. परमागम सारका हिन्दी अनुवाद । ६. परमारम प्रकाशका दोहानुवाद ।

अमरावतीमें हिन्दी माध्यमसे मान्टेसरी शिक्षण पद्धितसे बच्चोंको पढ़ाने हेतु कोई .संस्था नहीं थी। इस समस्याकी ओर जब आपका ध्यान आकुष्ट हुआ तो आपने सर्वप्रथम वहीं अपना मकान बनवाया और इसके उपरान्त उसका नाम बाल मन्दिर रख करके १९४२-४३ में उसका संचालन किया। उस संस्थाकी व्यवस्था देखकर छोटे बालक इतने प्रभावित हुए कि प्रातः ८ बजे आकर सायंकालके ५ बजे तक भी घर जानेका नाम नहीं लेते थे। शिक्षण-पद्धित नूतन ढंगकी थी। मध्यावकाश वेलामें बच्चोंको दूध व फल देनेकी व्यवस्था थी किन्तु जब आप वहाँसे चले आये तब वह संस्था टूट गयी।

आपके रुचिके सम्बन्धमें एक बात बताना अत्यनिवार्य है। वह यह है कि पुस्तकोंसे जितना स्नेह आपको है शायद ही किसीको है। पुस्तक संग्रहका यह शौक आपको गुरु पं० घनश्यामदासजीसे अध्ययन कालमें ही मिला था जो आज तक उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान है। आपके संग्रहालथमें लगभग ढाई हजार पुस्तकें हैं। आपका नारा है कि ''फटे वस्त्र पहिनकर भी नई पुस्तकें खरीदो।''

आप एक सम्पन्न परिवारके मुखिया हैं। आपका प्रथम विवाह सन् १९२४में हुआ था किन्तु दुखद विषय है कि आपकी धर्मपत्नीका प्रसूतिकी गड़वड़ीसे १९३५ में निधन हो गया तब आपका दूसरा विवाह हुआ। आपकी द्वितीय धर्मपत्नीका नाम चिन्तामणि है। आपके पाँच पुत्रियाँ एवं छह पुत्र वर्तमान हैं। जिनमेंसे सभी कुशल एवं प्रतिभा सम्पन्न तथा उच्च पदोंपर हैं। आपके कुटुम्बमें ७ विद्वान् पण्डित हुए। आपका ज्येष्ठ पुत्र तो अमेरिकामें विज्ञानकी उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। बीर निर्वाण शताब्दीपर आपको विद्वत् समाजका २५ सौ रुपयेका सम्मानित पुरस्कार मिला। वस्तुतः आप एक उच्चकोटिके विद्वान्, प्रभावोत्पादक प्रवचनकर्ता, कुशल सम्पादक, महानतम साहित्यकार, अनुवादक एवं निबन्धकार, समाजके कर्णधार एवं देशके गौरव हैं। समाजको आपने बहुत-कुछ दिया और निरन्तर देते चले जा रहे हैं।

विद्वत् अभिनन्दन ग्रन्थः १४७

पर्सण्डाम् की अवसरण कथा

HIPP THE PROPERTY OF THE PROPERTY

111

रास्त

· 中国 新一、田田市

विता प्रमासक सहित्याचार स्वो के सक कि के जिल्लांक

河南南部东西

明明を中華



आगम ग्रन्थोंके टीकाकार पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, साढूमल (अपना परिचय—अपनी कलमसे)

- १. जन्म-वि० सं० १९६१ की श्रावणी अमावस्या।
- २. जन्मस्थान—साढूमल, जिला-ललितपुर (उ० प्र०)।
- ३. शिक्षण——१. प्रारम्भसे मध्यमा और विशारद पूर्णतक, श्री महावीर दि० जैन पाठशाला, साढ्मल । २. शास्त्री और न्यायतीर्थ— स्व० हु० जैन विद्यालय, इन्दौर । ३. सिद्धान्त ग्रन्थोंका अध्ययन—शिक्षामन्दिर, जबलपुर ।
- ४. अध्यापन—१. स्याद्वाद महाविद्यालय, काशी । २. जैन पाठशाला, साढूमल । ३. भा० व० दि० जैन महाविद्यालय, ब्यावर । ४. जैन वीराश्रम, जैन सिद्धान्तशाला, ब्यावर । ५. उत्तर प्रान्तीय जैन गुरुकुल, हस्तिनापुर ।
- ५. १. सम्पादन कार्य—धवला आफिस, अमरावती । २. ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन, ब्यावर । ३. हीराश्रम साढूमल । ४. वीर सेवामन्दिर दिल्ली लक्षणावलीका सम्पादन—संशोधनादि ।
- ६. प्रचारकार्य-श्री भा० व० दि० जैन संघ, मथुरा।

अभी तकके अन्दित-सम्पादित ग्रन्थोंकी सूची इस प्रकार है-

- १. धवलसिद्धान्तके ५ भाग पूर्ण, छठा आधा भाग ।
- २. सटीक जिन सहस्रनाम, ३. वसुनन्दि श्रावकाचार,
- ४. प्राकृत पंचसंग्रह, ५. जैन धर्मामृत, ६. कर्मप्रकृति ।
- ७. श्रावकाचार-संग्रहके ५ भाग (जिनमें ३३ श्रावकाचारोंका संग्रह है)
- ८. दयोदय चम्पू, ९. सुदर्शनोदय काव्य, १०. जयोदय महा-काव्य पूर्वीर्घ ।
- ११. प्रमेयरत्नमाला (विस्तृत विवेचन सहित)
- १२. दशवैकालिक सूत्र, प्रवचन संग्रह पांच भाग।
- १३. जीतसूत्र, १४. दशाश्रुतस्कन्ध, १५. निशीथसूत्र आदि प्रायश्चित्त सुत्रोंका अनुवाद ।
- १६. स्थानाङ्गसूत्र, समवायाङ्गसूत्र ।

७. अनेकान्त एवं जैन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग २०० खोज-शोधपूर्ण लेख।

सन् १९२६ में मेरे मझले भाई दक्षिणकी तीर्थयात्रासे लौटे। उन्होंने घरवालोंको मूड़बिद्रोकी रत्न-प्रतिमाओं और ताड़पत्रपर लिखित सिद्धान्त ग्रन्थों की महत्ता सुनाई। मेरे मनमें विचार आया—मैं भी बड़ा होनेपर उनके दर्शन कहुँगा।

मेरे स्वप्न सत्य सिद्ध हुए

सन् १९२३ में जब मैं जैन शिक्षामिन्दर जबलपुरमें स्व० पं० वंशीधरजी सिद्धान्तशास्त्रीके पास सिद्धान्तशास्त्रीके अन्तिम वर्षमें पढ़ रहा था, तब स्वप्न आया—'मैं सिद्धान्त ग्रन्थोंका स्वाध्याय कर रहा हूँ' इतनेमें प्रातःकाल जागनेका घंटा बजा। मैं उठा, प्रार्थनामें शामिल हुआ और आकर कमरा झाड़ते हुए पलंगके नीचे दो सिम्मिलित पत्र मिले। उठाकर देखा, उनमेंसे एकपर लिखा है—'श्री घवल सिद्धान्तके मंगल श्लोक, तथा दूसरेपर जय घवल सिद्धान्तके मंगलश्लोक'। मैं उनका पाठकर आनन्दसे फूल गया। सोचा—एक बार इन सिद्धान्त ग्रन्थोंका अवश्य स्वाध्याय कहाँगा।

सन् १९२४ के अक्टूबरकी बात है, मैं स्याद्वाद महाविद्यालय, काशीमें धर्माध्यापक था, विद्यालयमें ही रहता थां। स्वप्न आया—'मैं सिद्धान्तग्रन्थोंका स्वाच्याय कर रहा हूँ'। इतनेमें विद्यालयका घंटा बजा, मैं उठा और पूर्व प्राप्त

१. ये पत्र जीर्ण-शीर्ण दशामें आज भी मेरे पास सुरक्षित हैं।

पत्रोंका ३ बार वाचन कर नित्य नियममें लग गया। दिनमें सहारनपुरसे विद्यालयके स्व० मंत्री बा० सुमितप्रसादजीका सुपिरटेन्डेन्टके नाम तार आया— 'पं० हीरालालको उत्सवके लिए भेजो'। उन्होंने उसी दिन मुझे सहारनपुर भेजा। तीसरे दिन जब मैं ला० जम्बूप्रसादजीके मन्दिरमें दर्शनार्थ गया तो बहाँपर पं० सीतारामजीको सिद्धान्तप्रन्थोंकी प्रतिलिपि करते देखा। हर्षविभोर होकर वहाँ ५ दिन तक उनसे पत्र लेकर स्वाध्याय करता रहा। तभी अनुभव किया कि इनके स्वाध्यायके लिए प्राकृत भाषाका ज्ञान आवश्यक है। अतः प्राकृत पढनेका संकल्प किया।

सन् १९२७ से ३२ तक भा० व० दि० जैन महाविद्यालयमें धर्माध्यापक रहा। वहाँ रहते समय ६वे० आगमोंके पढ़ानेका अवसर मिला, अतः प्राकृतका खास तौरसे अध्ययन किया। सन् १९३३ के प्रारम्भमें उज्जैन आ गया। तभी पुनः स्वप्न देखा—मेरे सामनेकी चौकीपर सिद्धान्त ग्रन्थ विराजमान हैं और मैं उनका स्वाध्याय कर रहा हूँ। दो दिन बाद ही स्व० सेठ लालचन्द्रजीके साथ झालरापाटन जाना और वहाँ दो मास ठहरना हुआ। वहाँके ऐ० प० दि० जैन सरस्वती भवनमें सिद्धान्त ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि की जा रही थी। अतः प्रतिदिन नियमित रूपसे ४ घंटे उनका स्वाध्याय किया और षट्खण्डागमके जीवस्थानके सूत्रोंका संकलन भी अपनी कापीमें करता गया।

सन् १९३५ में स्व० श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी भेलसावालोंके दानसे स्व० प्रो० श्री हीरालालजी अमरावतीने सिद्धान्तग्रन्थोंके प्रकाशनकी योजना बनाई। अमरावतीके जिनमन्दिरमें उनकी प्रति लिखाकर मंगाई गई और उन्होंने 'जयधवला' के प्रारम्भिक अंशका अनुवाद करके आठ पेजका एक नमूना विद्वानोंके पास 'सम्मत्यर्थ' भेजा। उसपर विद्वानोंने पत्रों एवं समाचार-पत्रोंके द्वारा अपनी-अपनी सम्मति दी और समालोचना भी की। मैंने भी उस नमूनेकी अशुद्धियाँ बताते हुए लिखा कि क्रमको देखते हुए पहले 'धवलसिद्धांत' का प्रकाशन करना चाहिए। मैं इसे करनेको तैयार हूँ। फलस्वरूप पत्र-व्यवहार हुआ और मैं तीन वर्षतक उज्जैन रहते हुए ही धवलसिद्धान्तके अनुवादके साथ टिप्पणी लिखनेका कार्य करनेमें संलग्न रहा। जब एक भागका कार्य तैयार हो गया, तब मुझे अमरावती बुला लिया गया। इस बातको प्रो० हीरालालजीने प्रथम खण्डके प्राक्कथनमें स्वयं स्वीकार किया है।

सन् १९३९ के प्रारम्भमें धवलाके प्रथम भागका प्रकाशन समारोह हुआ, उसके एक दिन पूर्व ही ग्रन्थपर सम्पादक-नामके देनेपर विवाद उत्पन्न हो गया। मैंने देखा कि टाइटिल पेज पर वे मेरा नाम ही नहीं दे रहे हैं। तब मैंने अपना त्यागपत्र दे दिया। उत्सवमें आये श्री नाथूरामजी प्रेमी और श्री पं० देवकी-

नंदनजी सिद्धान्तशास्त्रीने बीचमें पड़कर जो दिशा सुझाई उसके अनुसार टाइटिल पेजपर नाम देनेका निर्णय किया गया।

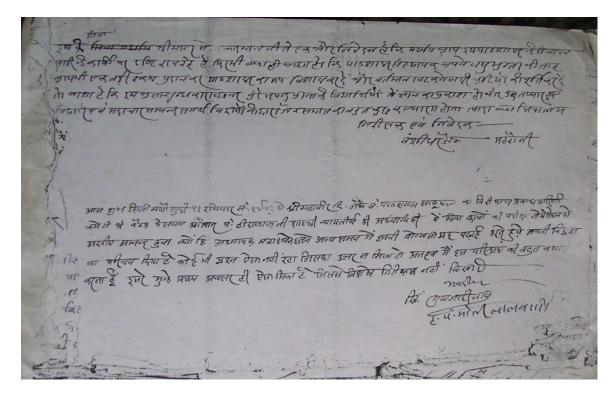
यहाँ यह ज्ञातन्य है कि ग्रन्थको प्रेसमें देनेके साथ ही श्री पं० फूलचन्द्रजी सिद्धान्तशास्त्रीको भी अमरावती बुला लिया गया था और हम दोनों ही अनुवाद आदि करने लगे थे। इस बीच जो मनमें विकल्प उठा था, वह पूर्ण रूपसे शान्त न होनेके फलस्वरूप मैंने जयधवलके स्वतंत्र सम्पादन करनेके लिए उसकी प्रेस कापी तैयार की, जिसकी पृष्ठसंख्या नौ हजारसे ऊपर है।

सन् १९४२ में श्री ब्र० जीवराजजीने अपने द्रव्यका सदुपयोग करनेके लिए परामर्शार्थ कुछ विद्वानोंको गजपंथा क्षेत्रपर आमंत्रित किया। वहाँपर भा०व०दि० जैन संघ मथुराके संचालकोंने प्रकट किया कि 'जय धवल'का प्रकाशन संघ करेगा। फलस्वरूप ब्र० जीवराजजीने 'जैन संस्कृति संरक्षक संघ'की स्थापना की और यहाँसे सर्वप्रथम 'तिलोयपण्णत्ती'के प्रकाशनका निर्णय किया गया। तथा मैंने 'जयधवल' सिद्धान्तकी प्रेस कापी मथुरा-संघको दे दी, जिसके आधारपर अभीतक उसके भागोंका प्रकाशन हो रहा है।

घवल सिद्धान्तकी छठी पुस्तकके प्रकाशनकालमें मतभेद हो जानेसे मैं सन् ४२ के अन्तमें घवला-कार्यालयसे अलग हो गया और ६० हजार प्रमाण जयधवला टीकामेंसे ६ हजार प्रमाण चूणिसूत्रोंके उद्धार करनेमें लग गया। इसके लिए मुझे लम्बे समयतक सहारनपुर रहना पड़ा।

सहारनपुर रहते हुए स्व० श्री जुगलिकशोरजी मुख्तार साहबने जयधवलाके चूिंगसूत्रोंके साथ 'कसायपाहुडसूत्र'को वीरसेवा मन्दिरसे प्रकाशित करनेका भाव व्यक्त किया। मैंने स्वीकारता दे दी और चूिंगसूत्रोंको ताड़पत्रीय प्रतिके मिलान करनेके लिए मूडबिद्री गया। तत्कालीन भट्टारकजी महाराजकी अनुज्ञा और पं० नागराजजीके सहयोगसे मिलान कर वापिस आया। सूत्रोंका अनुवाद, व्याख्यादि की। अन्तमें वीर सेवामन्दिरके अध्यक्ष स्व० बा० छोटेलालजीके सहयोगसे 'कसायपाहुडसुत्त' जैसे विशाल सिद्धान्तग्रन्थका वीरशासन संघ कलकत्तासे प्रकाशन हुआ और इस प्रकार एक स्वतंत्र रूपसे सिद्धान्त ग्रन्थके उद्धारका सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अब अन्तिम समय अपनी जन्मभूमि स्थित श्री महाबीर दि० जैन संस्कृत विद्यालयको संभालते हुए अधूरे पड़े ग्रन्थोंके अनुवाद-सम्पादन आदि कार्योंमें लग रहा हूँ।



A visitor report about Kakka's teaching at the Sadumar pathshala (ca. 1924)

विद्वद्वर्य सिद्धान्तशास्त्री पं॰ हीरालालजी न्यायतीर्थकी

अखिल दिगंबर जैन समाज सिवनी भी ओर से यह मशंसा-पन्न या मेम-पदा उपहार है।

> किस तरह इम गाये यश विद्वान् दीरालालका। जिनकी थिद्रता है जैसे श्रोत हो पातालका ॥ इनके स्वागत के लिये इमने किया कुछ भी नहीं। पालकी म्याना तथा न प्रबन्ध था सुख पालका ॥ उफ़ री नादानी कहें क्या, हाय री गफ़लत तुझे। इनका स्वागत इस फ़दर होना था ज्यों भूपालका ॥ सादगीसे सिवनीमें शीरोशकर से मिल गये। ज़ररा भर हमने किया न प्रवन्ध इस्तकबालका ॥ इल्म जिनके पास है गुरवतमें भी वह मस्त है। क्याल हो सक्ता नहीं है शालका और मालका ॥ वाह! माँ विदे! जिसे तू प्राप्त होवे पुण्यसे। उसका आदर जगतमें, निज नगरमें भूपाल का वाह क्या आनन्द था दस धर्म के शुभ पर्वमें। हर ज़शाँ पर ज़िक है आनन्द का इस साल का ॥ इस अवस्थामें भी इन को मादा है इस कृत्र। संस्कृत स्लोक पढ़नेकी अनोसी ढालका॥ जो कहें इक सांसमें कहते चलें धारा-प्रवाह। कय घड़ी का डर था और कब ख़ीफ़ था घड़य लका ॥ युक्तियाँ किस ख्वियों से छाके रख देते थे ये। याद है अच्छा तरीका उनके इस्तेमालका॥ ऊंघनेवाळे सुने उकताय क्या इनको फिकर। ढलना बन्द होता न था हपान्त की टकसालका बीचमें चुटकी का लेना ख्व इनको याद है। और विछाना याद है इनकी हँसीके जालका॥ यह जियें सौ साल तक, हों सालके दिन आठ सौ। बाल भी बाँका न हो जिनधर्म के इस लाल का ॥ ताव क्या पन्ना की जो कुछ कह सके तारीकृमें। कीन भर देगा मला गागरमं सब जल तालका ॥

ता॰ ५-९-४१ भाद्रपद गुक्का १५ वी. नि. सं॰ २४६८

रचयिता—पन्नालाल परवार



राजस्थान प्रदेश समिति

फोन : 72839 73946



लुहाडिया भवन, धामासी मार्केट, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर-३०००३ दि० ...रेल्/१६७ ६

शीमान् पं हीरा लाल और शास्त्री,

- ट्यावर --- । मान्यवर महोदय,

सादर जयजिनेन्द्र,

बापको सूचित किया जाता है कि बाल इण्डिया दि०
भगवान महावीर 2500वाँ निर्वाण महोत्सव सोसायटी, राजध्यान
प्रवेश समिति, जयपुर ने अपनी बैठक दिनाँक 22 दिसम्बर, 74,
में बी बीर निर्वाण भारती, पेरठ व्दारा बापको सम्मानित एवँ
मुरकृत किये जाने पर हर्ष प्रकट करते हुए बांभनन्दन हैत
सँलम्न प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पाम किया गया । अतः
लिये गये निर्णयानुसार प्रस्ताव की प्रति बापकी सूचनार्ध केवके
भेजी जा रही है। हमें बाझा है कि बाप जैन धर्म, सँस्कृति एवँ
साहित्य के प्रचार व प्रसार में इसी तरह योग देते रहेंगें ।
सँलम्क - प्रस्ताव की प्रति ।

भवदीय, पुरशाची क्या कुहाडिया) (सुरज्ञानी क्या नुहाडिया)

पण्डित हीरालाल जी सिद्धान्त शास्त्री,

(एक साहित्यिक मूल्यांकन)

– डा॰ राकेश जैन, मड़ावरा

आगम प्रन्थों के नहान टीकाकार उपराष्ट्रपति वी डो. जली द्वारा सम्मानित, धयला, शक्कपवला, कर्म सिद्धाना, जैन न्याय शास्त्र और प्रोन पहित्य-प्रसाद के संरक्षण एवं पुनरुद्धार भे समग्र जीवन समर्पित करने वाले पत-समाराधक महान विद्वान है-

शास्त्री साद्मल।

अलितपुर, उ.प. में तह महरीनी के साद्मल ग्राम में विसं १६६१ की प्रावणी अभावस्था को माता-राजरानी भाइयों में सबसे छोटे थे।

आपकी २ शादी हुई थी-प्रथम विवाह १६२४ में कायनवाई से (गुटा-सोजना) हुआ था। १६३५ में प्रसृतिका में निधन हो गया। दूसरी शादी श्री चिन्तामणि (रहली) से हुआ।

आपके ६ यशस्यो, विद्वान, चिन हो गया था। शिक्षा— प्रारंभ से मध्यमा और

जैन पाठशाला साद्मल, शास्त्री और यायतीर्थ- जैन विद्यालय इंदौर सिद्धान्त ग्रन्थों का अध्ययन-शिक्षा मंदिर जबलपुर ।

सविद्यालय काशी, २. जैन पाठशाला साद्भल, ३. भाय दि. जैन प्रकाशन हुआ। महाविद्यालय व्यावर, ४. जॅन वीराश्रम जैन सिद्धान्तशाला व्यावर, ५, उत्तर पानीय जैन गुरुकुल हस्तिनापुर।

पंडित जी के द्वारा अनुदित-स-पादेत प्रन्थों की नुधी इस प्रकार 8-9 धवल सिद्धान्त के व् भाग पूर्ण, छठवां आधा भाग, २ सटीक जिन सहस्रनाम, ३. वसुनन्दि श्रावकाचार, ४. प्राकृत पच संग्रह, ५ जैन धर्मामृत, ६. कर्म प्रकृति, ७. शादकाधार संग्रह के ५ भाग, ८. दयोदय धम्पू, ६. सुदर्शनोदय काव्य, १०. जयोदय काव्य पूर्वार्ध, १९ प्रमेय रत्न माला (विस्तृत-विवेधन सहित) (नारव एव दर्शन ग्रन्थ), १२. दशवैकालिक सूत्र प्रवयन संग्रह पांच भाग ५३. जीत सुत्र १४ दशा श्रुत स्कन्ध, १५ निशीय सूत्र आदि प्रायशिवत सूत्रों का अनुवाद, १६ स्थानांग सूत्र, समवायांग सूत्र।

अनेकाना एवं जैन पश्चिकाओं में प्रकाशित संगमग २५० खोण शोधपूर्ण संख

सम्पादन कार्य- १ धवला आफिस अमरावती, २. ऐ. परनालाल दिंद जैन रारस्वती भवन ध्यावर हाराक्षम सादूमम ४, दीर सेदा निर्दे दिल्ली-स्थानावली का सम्यादन धनादि।

वाधार कार्य- क्षेत्र १३ वित

शिक्षा मंदिर जबलपुर में स्व. पं. बंशीधर पं काशित दोसवीं सदी के महानतम विद्वान जी सिद्धान्त शास्त्री के पास सिद्धान्त शास्त्री के अतिम वर्ष में पढ़ रहा था. राव स्वप्न आया कि मैं सिद्धान्त ग्रन्थों का स्वाध्याय कर रहा हू। इतने में आधार शास्त्र के महान् विद्वान-जिन प्रातकाल जागने का घटा बजा। मे उठा प्रार्थना में शामिल हुआ और आकर कमरा झाड़ते हुये पलंग के नीचें दो पत्र मिले ! उठाकर देखा, उनमें से श्री स्व ए हीरालाल जी सिद्धान्त एक पर लिखा है श्री धवल सिद्धान्त का मंगल श्लोक तथा दूसरे पर जयध जीवन परिचय- श्री पण्डित जी । यस सिद्धान्त का मंगल श्लोक। मैं का जन्म बुन्देलखण्ड के जनपद उनका पाठकर आनन्द से फूल गया। सोधा एक बार इन सिद्धान्त ग्रन्थों का अवश्य स्थाध्याय करूंगा।

पंडित जी को पुनः दूसरा स्वप्ने पिता- श्री दरयावलाल जैन मोदी के सन् १६२४ अक्टूबर में आया, जब वे यहां हुआ था। पाने दो वर्ष की उम्र में काशी-स्याद्वाद विद्यालय में धर्म-बड़ी भाभी की गोद में साँपकर ध्यापक के रूप में कार्यरत थे। स्वप्न माता-राजरानी चल बसी। आप ५ आया कि मैं सिद्धान्त ग्रन्थों का स्वाध्याय कर रहा हूं। दों दिन बाद ही स्व. सेट लालचंद जी के साथ झालरापाटन जाना और वहां दो मास ठहरना हुआ। वहां ऐ. पन्नालाल जैन सरस्वती भवन में सिद्धान्त ग्रन्थों की प्रतिलिपि की जा रही थी। अतः प्रतिदिन नियमित रूप से ४ घंटे वैज्ञानिक पुत्र हुये ५ पुत्रिया हुई । ५ स्वाध्याग किया और षट् खण्डागम के करदरी सार्यकाल १६८० में आपका जीव स्थान के सूत्री का सकलन भी जीव रथा। के सूत्रों का सकलन भी अपनी कापी में करता गया।

धवल सिद्धान्त की छटी पुस्तक विशास्त पूर्ण तक-श्री महावीर दि० के प्रकाशन काल में मतभेद हो जाने से पण्डित जी सन् ४२ के अन्त में धवला कार्यालय से अलग हो गये। अन्त में वीर सेवा मन्दिर के अध्यक्ष रव. वा. छोटेलाल जी के सहयोग से अध्यापन- १ स्याद्वाद कषाय पाहुड्युत जैसे विशाल सिद्धान्त ग्रन्थ का वीर शासन संघ कलकत्ता से

> आदरणीय पण्डित जी के रिधतिकाल में प्राचीन आचार्यों के द्वारा प्रणीत साहित्य का विशाल भाग प्रकाश में नहीं आ सका था। बहुत आवश्यकता थी विविध शास्त्र भण्डारों में बन्द, दीमक भशित होते हुये यत्र तत्र विकीणं जैन साहित्य के संग्रहण पूर्वक उनके भाषा रूपान्तर एवं आधुनिक पद्धति के अनुकूल सम्पादनोपरान्त प्रकाशित की। पण्डित जी ने ऐ. पन्नालाल सरस्वती भवन में सेवा के माध्यम से विकीर्ण साहित्य के संग्रह एवं संरक्षण में तो अपनी पहली भूमिका निमाई। राथि ही विशाल परिमाण में प्राचीन जैन साहित्य का सम्पादन एवं अनुवाद कर उन्हें

Brater बाल यह है flac flavor-विवेधन की सक्ष्मता एवं प्रतिपादन के विस्तार वाले



जैनाचार्य प्रणीत ऐसे ग्रन्थ का कार्य हाथ में लेने से पण्डित जी नहीं घबराये, जिन्हें देख अच्छे-अच्छे विद्वानों का गर्व खर्व होने लगता है।

आपने अन्तिम समय में भी ग्रन्थ लेखन की साधना सतत जारी रही। भृत्यु से ५ दिन पूर्व आपने सादूमल से ब्यावर तक की यात्रा अस्वस्थ होते हुये भी किसी ग्रन्थ प्रकाशन के निमित्त की थी जो उनकी ज्ञान-साधना के प्रति कर्मठता का एक अनुकरणीय उदाहरण है।

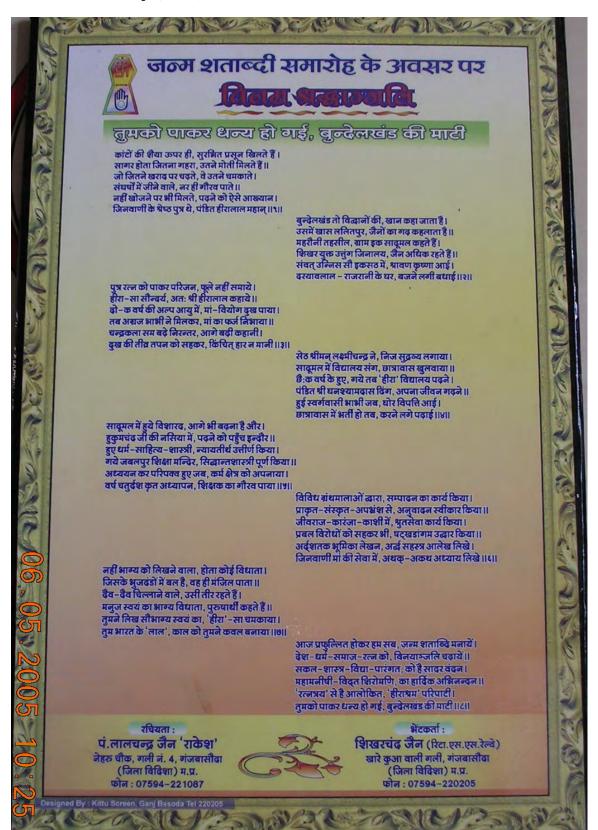
अन्तिम समय में पण्डित जी ने जैन ग्रन्थ नंदिसूत्र की हिन्दी टीका तथा जैन मंत्र-तंत्र शास्त्र तैयार किया

पण्डित के साथ जीवन में काम मेरा नाम तेरा' की घटनायें भी साहित्य-सृजन-प्रकाशन में घटी।

सन १६७३ में भ्यावर (राज.) मे संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के वर्षायोग में आचार्य श्री के सान्निध्य में ज्ञान-पिपासा-जिज्ञासा धर्मामृत वर्षा हुयी।

पण्डित जी के जीवन के प्रारम्भिक जीवन में लेखन कार्य में बड़ी सुपुत्री-सिंघई हेमलता जैन मडावरा एवं अंतिम समय में ५्वीं सुपुत्री उर्मिला ने लेखन में सहयोग किया।

सुखद संयोग कहा जायेगा कि पं. हीरालाल जी कें हीरा पुत्र हुये बडे सुपुत्र-अमेरिका में न्यूयार्क शहर मे डेलावेयर यूनि, वायो, प्रोफे० महान वैज्ञानिक डा. महेन्द्र कुमार जैन ने म. महावीर स्वामी के २६००वां जन्म महोत्सव वर्ष में भ. महावीर के निवाण दिवस पर 'हीरा आश्रम' हीरा पब्लिकेशन के माध्यम से जीवस्थान (षटखंडागम खण्ड) का अंग्रेजी अनुवाद प्राकृत से-अंग्रेजी में सी डो, के रूप म प्रकाशित हो गयी है। इन्टरनेट की वेबसाइट- www. NAMOKAR-org Email- hira-pub@hirapub-org



1977 Two letters from a student of Karm Prakrati

जिन शासन पुर्वातक, प्राम्मानिक शासे संबार के स्वामी, नेज्ञानेन तथ्य ने नायन , आन्मीय अनुप्रम अनुभातिकों हे जाना आचार्य की नानेश को शत्थान अत्या में परमात अगनार्ष-री जी फ. ने प्राचा जारापन विद्या भिलाजी दे. श्री में बता माने भी जा. ने निम्न भाव अल्पे जैन समाज के निदंदन के जिड़ित स्तानी विशवाली A. 201-21 1 उनाम प्रसन्त हो हो ने में परम प्रातीय महिम आनार भगवन के पास सनुशत पहुँच गमाई। और पुन: मुनाह रत ही अध्याप निरोध में संतर्ग डी मीडन मर्रेड्म। आप भी एड आहितीय जिहान ह गहम तर् दश्में । उम्पत अपने जीवम में अन्ह) माम Ban (35) 21 वीडिन वर्षे। आपने मेरे पर अनुग्रह करहे जो मार दान दिया उप उपकार को में भूत नहीं सबता। आपक नुषा पूर्ण हास मुद्ध पुर अमारनी रही है। आप का स्नेट एने आप की सरताना तप जाने पति कई कार मेरे स्मृति परता पर उम्मी रहती है। जैत गुल्पों में द्रम्म पमडी नामद युन्य आले गहत भानाजानाहै। उसको आपने अन्यन सार्य एवं छ (छ भाष) मुद्ध सम्माया है तथा मूत गाया को से ते बर तैयून मोहेंने बह रोका का उन्ने छिना-यह बहुत सुन्दे(हैं) मलन प्राप ही गुन्थों के भावों की समय कर अन्यों हो अध्यापन अध्यापन द्वाने में तम्में के महताहै। नेमाराज्या चिद्राम नहीं। बास्तव में आप की ठोरा चिद्रना नेही गरम एवे भरीन गुल्म के सुगम बना दिया है। यह में स्वंपेपला अन्सम् कर पाया हुई अगप का स्नेट मेरे पर अनुहा रहा ने साही सड़ा अना रहे। हारी में अनुश्न रावना ही

सादर समार्जन न

नी मलय। गिरे आनार्य अरा गुल्यन एवं नीमद् पशी विजय विरायन टी आ संयुक्त "कम्मपपडी " नामयं गुल्यको भी अन्मा मा युमार्गी जैन संयु बी आनेर ने उत्त्य स्मरीय पाह को को कम प्रकृतिका तलस्पशी क्रान कराने हेतु भी सायुमार्गी जैन पार्मिंग्र परीक्षा मोर्ड की रत्ना कर परीका में रखाहै। त्ये किन यह गुल्य बहुनही गहन एवं दुहहहै। इस में कमें को विश्ले खण अनि सूक्ष्मना से किया गणाहै। जिस को बिना गुह के सम्भन्ना अने कारिन है। और इस हो पहाने नात्ये अध्याप न भी कहन कम इन्हिंगा न होने हैं।

हमी स्विति में ह्याचर संघन प्रमण्डेम निर्जन्य जमण संस्कृति रक्षद्र धर्मपात्य प्रतिकेषक, सपना दर्शन प्रणेत जिन शासन अद्योत्न क्र आगमनादिए , संघम पूत्र जगत्वन अ आचार्य प्रजा पूज्य - A-A २००८-में ना ना तात्व- में फर्ले अल्लार्थि हों में विनेति अस्तुल करते हुए प्राप्येना की दि हमारे परं - न्यान्य में पार्डित का अन्क्षा संघोग हैं और स्वान्य में सेतों का चातुर्माम होना भी अस्यानश्यद्व है। तादि निद्या-भित्याकी सेतों का अध्यपन भी हो सब्दे और हमारा सेन भी चातुर्मास से वाज्यित न रहे।

आयार्च उत्तर की असीम कृषा से आयार्च उत्तर के काना-राष्ट्रस महान् लपरगीरा ज छै॰ नी ई स्वर फ़ीने जी म. सा. साहेत सायार्च उत्तर के उथम सिह्य रत्न विद्वद्यी छै॰ थी सेवन्त माने जी म. एवे विद्यार्भिताकी शी अध्योत मुन्ति जी म. शाशा र का भी० २० रुर का गात्मीर ट्यांगर में हुना।

व्यानर में निराजने हुए निहरूवर्ष दें श सेवंत्र पृति ती मा. का मुख्य त्यस्म विद्याच्याम का रहा होते उत्ते ने प्रामेह निहान दें शिरीरात्मात जी हा. ग्रास्त्री द्वारा "कम्म-प्राप्ती" का अध्यापन प्रार्थिन द्वादिया। अध्यापत करते हैं विद्वाप के शी सेवन प्रात्मी मा. जेहर में यह स्पूर्ण " उत्याप ही दि इस मुन्य को प्रात्ने वात अध्याप हो हा

वन केन जन्म अभानसाहै। अयोल इने छीने नहलरी इस पाठित है। जो हैं- ने भी बहुहै। अता हैं पहले पहले इस गुन्य ड हिन्दी अनुसाद क्यों न कर्म भिता में नि हरे पत्ने में खानिया एन होराना रहे। उत्तर की पत्ने अते संग सती वृत्द को थे इससे महायत। प्राप्ति।
(किसाम्बानार्थ)
विद्रम्म की किस की किस किस किस किस प्राप्ति। स्वाप्ति कार्य यह वि ayest any only of the voter of an and and and and and second to the species of the second to the sec शास्त्री ने अगवन पान देशान पुने अवलोकत लेखीयन अर्डि स्ता आन्य क भा उत्तरी मति-। ने संशोधन किला यह सत्ता विवित अनुनारित गुन्य मेरे हा य आमा तब मित लोना नि इसका उपयोग है में परीका में बेहने बाले गुरम्प भी जर मने एतर् ही हार की खुळाने हार नेपार हो जाय लो उपपुन्ड रहेगा। लड्नुस्म में ने मुख्याले के 12759 करासी हैं। आशाह मे राइप की गई जानेफां पाढ़कों के लिए उपनी ोगी। यह सिसी जाहर के एवं विद्यान को बिसी भी स्पत प्र महिम्द्रिक कार द्वार दास गान में में प्रिया कि की, निय उपना संस्थान (क्रिया जा महें। भारत मानार्ज भागना नानेश युक्त है असमा में सादर ममोपीन वह रहाई) उमनाम भाकत का नाग्रस्त्र Quat निमिन्द जीवस्य 2012166 उपांचर